Toppersnotes
Unleash the topper in you

SUPER-TET

Uttar Pradesh Basic Education Board

परीक्षा नियामक प्राधिकारी, उ.प्र.

एडेड जूनियर हाई स्कूल

सहायक अध्यापक/प्रधानाध्यापक (भाषा)

पेपर – 2 || भाग – 3 (क)

हिन्दी

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

1.	हिन्दी साहित्य एवं रचनाएँ	1
2.	वर्णमाला	31
3.	विराम चिन्ह	43
4.	शब्द भेद	44
5.	संधि	53
6.	समास	62
7.	संज्ञा	62
8.	सर्वनाम	64
9.	विशेषण	65
10.	क्रिया	66
11.	वाच्य	68
12.	काल	69
13.	अव्यय	70
14.	अलंकार	72
15.	रस	78
16.	छन्द	83
17.	पर्यायवाची शब्द	87
18.	विलोम शब्द	89
19.	अनेक शब्दो के लिए एक शब्द	91
20.	वर्तनी	94
21.	प्रमुख लेखक व उनकी रचनाएँ	96
22.	मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ	102
23.	अवतरण के रचियता	104

मुहावरे एवं लोकोक्ति

अक्ल पर पत्थर पड़ना – बुद्धि भ्रष्ट होना
अंडे सेना – घर में बेकार बैठना
पौ बारह होना – अत्यधिक लाभ लेना
कान का कच्चा होना – सुनी-सुनायी बातों पर विश्वास करना
घुटने टेकना – हार मान लेना
छाती पर मूँग दलना – बहुत परेशान करना
कान में तेल डालना – कुछ न सुना
नौ दो ग्यारह होना – भाग जाना
गाँठ में बाँधना – खूब याद करना
कलेजा पसीज जाना – द्रवित हो जाना
नाक रगड़ना – विनती करना
मक्खी मारना – खाली बैठना
औंधी खोपड़ी – निपट मूर्ख
आँख के अँधे, गाँठ के पूरे – धनी परन्तु मूर्ख
कान भरना – चुगली करना
सिर उठाना – विद्रोह करना
चैन की वंशी बजाना – मौज करना
आँख का तारा होना – अत्यन्त प्रिय
मुट्ठी गरम करना – रिश्वत देना
नाक बच जाना – इज्जत बच जाना
तीर मारना – बड़ा काम करना
समुद्र मंथन करना – कठोर परिश्रम करना
अँधे की लकड़ी – एक मात्र सहारा
कोई तीर चाट तो कोई बीर चाट – ताल मेल न होना
नई जमीन तोड़ना – अनूठा प्रयोग
आँख का अन्धा गाँठ का पूरा – मूर्ख धनी
कीचड़ उछालना – बदनाम करना
सिर खाना – अवांछित संवाद
सिर खपाना – सोच विचार करना

Toppersnotes
Unleash the topper in you

आग में घी डालना – क्रोधी को और अधिक उत्तेजित करना
बहती गंगा में हाथ धोना – अवसर का लाभ उठाना
बालू से तेल निकालना – असंभव होना
लोहा लेना – शत्रु से मुकाबला करना
घड़ो पानी पड़ना – लज्जित होना
अपने मुँह मिया मिट्ठू बनना – अपनी प्रशंसा स्वयं करना
चाँद पर थूकना – निर्दोष पर कलंक लगाना
आँख की किरकिरी होना – अप्रिय लगना
जौहर खुलना – भेद का पता लगना
ढपोर शंख – बेवकूफ
आकाश से बातें करना – बहुत ऊँचा होना
बाँसो उछलना – प्रसन्न होना
भाड़ झोंकना – व्यर्थ समय नष्ट करना
खून पानी होना – कोई असर न होना
ठीकरा फूटना – किसी के सर झूठा दोष लगाना
अँधेरी नगरी – अन्याय की जगह
अँगूठा दिखाना – इंकार करना
ईमान बेचना – अपने कर्तव्य से हट जाना
ऊँट के मुँह में जीरा – जरूरत से बहुत कम
कौड़ी को न पूछना – निकम्मा होना
आँखो का तारा – बहुत प्रिय
तालु में जीभ न लगना – चुप न रहना
गूलर का फूल होना – कभी भी दिखाई न देना
घाट-घाट का पानी पीना – बहुत अनुभवी होना
तीन तेरह होना – तितर बितर होना
कलेजा होना – हिम्मत होना
कच्चे घड़े से पानी भरना – ठीक ढंग से काम न करना
कान फूँकना – दीक्षित करना
अंग-अंग ढीला होना – शिथिल होना

Toppersnotes
Unleash the topper in you

अवतरण के रचियता

(i) " जाकी रही भावना जैसी । प्रभु मुरत देखी तिन जैसी" ॥
तुलसीदास

(2) प्रभुहि चितई पुनि चितन माहि, राजत लोचन लोल ।
खेवत मनसिज मीन जुग, जनु बिधु मंडल डोल ॥
लेखक = तुलसीदास

3) " प्रभुजी तुम चंदन हम पानी ।
जाकी अंग - अंग बास समानी ॥"
कवि – रैदास

4) अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी ।
आँचल में है दूध और आँखो में पानी ॥
मैथिली शरण गुप्त

5) बीती विभावरी जाग री ।
अम्बर - पनघट में डूबो रही
तारा - घट - उषा - नागरी ।
जयशंकर प्रसाद

6) मैं नीर भरी दुःख की बदली ।
महादेवी वर्मा

7) निज भाषा उन्नीत अहै, सब उन्नति को मूल ।
बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को शुल ॥
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

Toppersnotes
Unleash the topper in you

8) "दुख ही जीवन की कथा रही,
क्या कहूँ आज जो नहीं कही।" — सरोज स्मृति

9) "अधर - मधुरता, कठिनता - कुच तीक्ष्णता - त्यौर।
रस - कवित परिपक्वता जाने रसिक न औया"
— भिखारीदास

10) 'जसोदा ! कहा कहौं हौं बात ?
तुम्हारी सुत के करतब मो पै कहें माहि जात"
— चतुर्भुजदास

11) जो नर सुख दुख में दुख नाहिं माने।
सुख सनेह अरू भय नाहिं जाके, कंचन माटी जानै॥
— कृष्णदास

12) तुम नीके दुहि जानत गैया।
चलिए कुंवर रसिक मनमोहन लागौ तिहारे पैयाँ।
— कुम्भनदास

13) डेल सो बनाय आय मेलत सभा के बीच
लोगन मबित्त कीबो खेल करि जानो है।
— ठाकुर

14) " क्या कहा मैं अपना खंडन करता हूँ ?
ठीक है तो, मैं अपना खंडन करता हूँ
मैं विराट हूँ - मैं समूहों को समोये हूँ।
→ सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला

15) "आज मैं अकेला हूँ, अकेले रहा नहीं जाता
जीवन मिला है यह, रतन मिला है यह"
— त्रिलोचन

* निम्नलिखित पंद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए!

आज क्या तेरी वीणा मौन
शिथिल शिथिल तन थकित हुये डर
स्पन्दन भी भूला जाता डर
मधुर कसका सा आज हृदय में
आन समाया कौन ?

झुकती आती पलकें निश्चल
चिन्तित निद्रित से तारक चल
सोता पाराबार दृगों में
भर-भर लाया कौन ?
आज क्यों तेरी वीणा मौन ?

प्रश्न-1 इस कविता के रचियता कौन है —
(a) सुभित्रा नंदन पन्त (b) सुभद्रा कुमारी चौहान
(c) महादेवी वर्मा (d) मीराबाई

प्रश्न-2 नीरजा से उद्धत इस कविता का आशय है —
(a) न जाने आज क्यों उनकी हृदय हृदतंत्री बज नहीं रही
(b) दुःखो से आफरित हृदय तथा नेत्रो के अश्रुमय होने के बावजुन वीणा मौन क्यों है?

(c) विरह व्यथा की कसक तन-मन को व्याकुल बना रही है फिर भी आहें नही भरी जाती, रहस्य प्रकट करने में न जाने मैं क्यों असमर्थ हूँ

(d) विरह व्यथा की क्या सकथनीय है।

प्रश्न-3 इस कविता का उपर्युक्त शीर्षक होगा —

(a) सुधि बन धाया गौन (b) आज क्यों तेरी वीणा मौन

(c) हृदय में आन समाया कौन (d) मौन वीणा का रहस्य

प्रश्न-4 कवयित्री के बारे में यह निर्विवाद सत्य है कि वह —

(a) सर्वोत्कृष्ट कवयित्री थी (b) साधना में दूसरी मीरा थी

(c) छायावादी में न होकर अपनी विशिष्ट पहचान रखती थी

(d) सुप्रसिद्ध छायावादी कवयित्री थी।

प्रश्न-5 भाव व्यंजना की दृष्टि से यह कविता —

(a) दुर्बोध्य रचना है (b) श्रेष्ठ रचनाओं में से एक है।

(c) आरम्भिक रचना है (d) प्रकृति चित्रण की दृष्टि से बेजोड़ है।

उत्तर-1 ⇒ (c) महादेवी वर्मा

उत्तर-2 ⇒ (a) न जाने आज क्यों उनकी हृदतंत्री बज नही रही

उत्तर-3 ⇒ (b) आज क्यों तेरी वीणा मौन

उत्तर-4 ⇒ (b) साधना में दूसरी मीरा थी

उत्तर-5 ⇒ (b) श्रेष्ठ रचनाओं में से एक है।

दिये गये पंद्यांशों को पढ़कर इन प्रश्नों के उत्तर दीजिये →

लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार
देख मराठे पुलकित होते उसके तलवारों के वार
नकली युद्ध व्यूह की रचना और खेलना खूब
घोड़ा, सैन्य होसा दुर्ग तोड़ना ये थे उसके प्रिय खेलवार
महाशक्ति कुल देवी उसकी भी आराध्य भवानी थी
बुन्देले हर बोली के मुँह सुनी कहानी थी
खुब लड़ी मरदानी वह तो झाँसी वाली रानी थी

1) उक्त पद्यांश का सही शीर्षक हो सकता है —
(a) झाँसी की रानी (b) 1857 का गदर
(c) अंग्रेजो का आक्रमण (d) महाशक्ति कुल देवी

2) इस कविता की कवि/कवयित्री का नाम है —
(a) महादेवी वर्मा (b) सुभद्रा कुमारी चौहान
(c) तारा पाण्डेय (d) मीराबाई

3) इस कविता में प्रयोग किया गया रस है —
(a) भक्ति (b) करुण (c) शृंगार (d) वीर

4) कवयित्री की अधिकांश रचनाएँ —
(a) सामाजिक है (b) वात्सल्य पूर्ण है
(c) देशभक्ति पूर्ण है (d) धार्मिक है

5) 'सुब लडी मरदानी वह तो झाँसी वाली रानी थी'
में मरदानी शब्द का अर्थ है —

(a) वीरांगना (b) पुरुषों जैसी (c) पुरुषत्ववान (d) लडाकू

उत्तर-1 ⇒ (a) झाँसी की रानी

उत्तर-2 ⇒ (b) सुभद्रा कुमारी चौहान

उत्तर-3 ⇒ (d) वीर

उत्तर-4 ⇒ (c) देश भक्ति पूर्ण

उत्तर-5 ⇒ पुरुषत्ववान

Toppersnotes
Unleash the topper in you

Toppersnotes
Unleash the topper in you

निम्नलिखित अवतरण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उससे सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

अतीत की स्मृति में मनुष्य के लिए स्वभाविक आकर्षण है। अर्थपरायण लाख कहा करे कि 'गड़े मुर्दे उखाड़ने से क्या फायदा' पर हृदय नहीं मानता बार-बार अतीत की ओर जाता है अपनी यह बुरी आदत नहीं छोड़ता। इसमें कुछ रहस्य अवश्य है हृदय के लिए अतीत एक मुक्ति लोक है और अपने शुद्ध रूप विचरता है। वर्तमान में अंधा बनाए रहता है ~~और अपनी शुद्ध रूप~~ अतीत बीच-2 में हमारी आँखे खोलता रहता है। मैं तो समझता हूँ कि जीवन का नित्य स्वरूप दिखाने वाला दर्पण मनुष्य के पीछे रहता है आगे तो बराबर खिसकता हुआ दुर्भेद्य पर्दा रहता है। बीती बिसारने वाले 'आगे की सुध रखने' का दावा किया करें, परिणाम अशांति के अतिरिक्त और कुछ नहीं वर्तमान को संभालने और आगे की सुध रखने का डंका पीटने वाले संसार में जितने ही अधिक होते जाते हैं। संघशक्ति के प्रभाव से जीवन की उलझने इतनी बढ़ती जाती है। बीता बिसारने का अभिप्राय है जीवन की अखंडता और व्यापकता की अनुभूति का विसर्जन, सहृदयता, भावुकता या भंग - केवल अर्थ की निष्ठुर क्रीड़ा।

प्रश्न-1 अतीत ~~सी~~ की स्मृति में मनुष्य के लिए स्वभाविक आकर्षण है, क्योंकि —

(a) मनुष्य अतीत जीवी होता है।

(b) मनुष्य वर्तमान से भागना चाहता है।

(c) वहीं मनुष्य अनेक प्रकार के बंधनों से मुक्त रहता है।

(d) मनुष्य अर्थपरायण होता है।

प्रश्न-2 वर्तमान हमें अंधा बनाए रहता है' इसका भाव है –

(a) वर्तमान में बहुत सी समस्याएँ रहती हैं।

(b) हम वर्तमान की समस्यों में ही उलझे रहते हैं।

(c) हमारी सारी समस्याएँ वर्तमान से संबद्ध रहती हैं।

(d) हमें वर्तमान से प्रेम होता है।

प्रश्न-3 अशांति किसका परिणाम है??

(a) वर्तमान से लगाव का

(b) वर्तमान की उपेक्षा का

(c) भविष्य की चिंता का

(d) अतीत की विस्मृति का

प्रश्न-4 केवल अर्थ की क्रीडा निष्ठुर है क्योंकि –

(a) वह उलझनों को बढ़ाती है।

(b) वह अतीत की उपेक्षा करती है।

(c) वह वर्तमान की आधिक चिंता करती है।

(d) वह मनुष्य को सहृदय नहीं रहने देती है।

प्रश्न - 5 जीवन का नित्य स्वरूप दिखाने वाला दर्पण क्या है?

(a) अतीत की स्मृति (b) अतीत का सुख

(c) अतीत का गुण (d) अतीत का मोह

उत्तर - 1 => (c) वहाँ मनुष्य अनेक बंधनों से मुक्त रहता है।

उत्तर - 2 => (b) वह वर्तमान की समस्याओं में ही उलझे रहते हैं।

उत्तर - 3 => (d) अतीत की विस्मृति

उत्तर - 4 => (d) वह मनुष्य को सहृदय नहीं रहने देती हैं।

उत्तर - 5 => (a) अतीत की स्मृति

निम्नलिखित अवतरण को ध्यान पूर्वक पढ़िए और उससे सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर दीजिए ?

शासन की पहुँच प्रवृत्ति और निवृत्ति की बाहरी सीमा व्यवस्था तक होती है उनके मूल या मर्म तक इनकी गति नहीं होती है भीतरी या सच्ची प्रवृत्ति - निवृत्ति को जागरित रखने वाली शक्ति कविता है जो धर्मक्षेत्र में शक्ति - भावना को जगाती रहती है। भक्ति धर्म की रसात्मक अनुभूति है। अपने मंगल और लोक के मंगल का संगम उसी के भीतर दिखाई पड़ता है। इस संगम के लिये प्रकृति के क्षेत्र के बीच मनुष्य को अपने हृदय के प्रसार का अभ्यास करना चाहिए जिस प्रकार ज्ञान नरसत्ता के प्रसार के लिये है उसी प्रकार हृदय भी। रागात्मिका वृत्ति के प्रसार के बिना विश्व के साथ जीवन का प्रकृत सामंजस्य घटित नहीं हो सकता। जब मनुष्य के सुख और आनंद का मेल शेष प्रकृति के सुख सौंदर्य के साथ हो जायेगा, तब उसकी रक्षा का भाव तृणगुल्म, वृक्षलता, पशुपक्षि, कीट - पतंग सब की रक्षा के भाव समन्वित हो जायेगा, तब उसके अवतार का उद्देश्य पूर्ण हो जायेगा और वह जगत का सच्चा प्रतिनिधि हो जायेगा।

प्रश्न-1 स्व और लोक दोनों के मंगल या मिलन बिंदु किसके भीतर है ?

(a) भक्ति (b) ज्ञान (c) योग (d) कर्म

प्रश्न-2 → नरसता के प्रसार के लिये उपयुक्त है ?

(a) ज्ञान -हृदय (b) ज्ञान (c) हृदय (d) कर्म

प्रश्न-3 → जीवन का सामंजस्य विश्व के साथ स्थापित करने के लिए आवश्यक है ?

(a) प्रकृति (b) ज्ञानात्मिका वृत्ति (c) वैराग्य (d) रागात्मिका वृत्ति

प्रश्न-4 → सच्ची प्रवृत्ति - निवृत्ति जागरित रखने की शक्ति किसमें होती है ?

(a) कविता (b) विज्ञान (c) दर्शन (d) समाज शास्त्र

प्रश्न-5 → मनुष्य के अवतार का उद्देश्य कब पूर्ण कहा जायेगा?

(a) सिर्फ मनुष्य समाज के साथ सामंजस्य स्थापित होने से।

(b) मनुष्य समाज का शेष प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित होने से।

(c) पशु पक्षियों के साथ सामंजस्य स्थापित होने से।

(d) वृक्ष - लता के साथ सामंजस्य स्थापित करने में।

उत्तर-1 → (a) भक्ति

उत्तर-2 → (a) ज्ञान हृदय

उत्तर-3 → (d) रागात्मिका वृत्ति

उत्तर-4 → (a) कविता

उत्तर-5 → (b) मनुष्य समाज का शेष प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित होने से।

निम्नलिखित अवतरण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उससे सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर दीजिए ?

लंदन शहर टेम्स नदी के किनारे पर बसा हुआ है, जिसका पाट, चौड़ा है और पानी गहरा। समुद्र तट के निकट होने और टेम्स नदी में काफी पानी रहने के कारण लन्दन एक विशाल बन्दरगाह भी है। वहाँ रोज सैकड़ो जहाज आते जाते हैं। और दूर से देखने पर टेम्स नदी के ऊपर मस्तूलों का जंगल मालुम है। यहाँ से पृथ्वी की सभी दिशाओं को माल जाता है। और वहाँ से आता है लंदन तथा इंगलिस्तान हैं यदि एक सप्ताह के लिए जहाजो का आना - जाना बन्द हो जाए तो इस देश में त्राहि - त्राहि मच जाए। इसलिए ब्रिटिश साम्राज्य ने अपनी नाविक शक्ति इतनी प्रबल कर ली है कि उससे दुनिया में कोई भी राज्य शक्ति समुद्री युद्ध में टक्कर नही ले सकती।

प्रश्न 1 ब्रिटिश साम्राज्य ने अपनी नाविक शक्ति क्यों इतनी प्रबल बना ली ?

(a) कोई शत्रु उसे हरा न सके।
(b) कोई लन्दन पर आक्रमण न कर सके।
(c) कोई इसके जहाजो का आना जाना न रोक सके।
(d) लन्दन शहर को कोई क्षति न पहुँच सके।